divitiis est, them. *ga-biga* = सभग; cf. etiam lith. *nabagas* homo miser, pauper, *na* = scr. न non; *bagotas* dives; russ. *ú-bogiĭ* pauper, *bogatyĭ* dives; cf. Pott. pp. 235.236.)

भगवत् (a भग s. वत्) felix, beatus, excelsus, excellens, praeclarus, venerabilis. Su. 3.24.4.23. Bh. 10.14. Ragh. 8.80. (Cf. slav. *bog* deus.)

भगिनी *f.* (a भग s. इन् in *fem.*) soror.

भग्न v. भञ्ज्.

भङ्ग *m.* (r. भञ्ज् s. अ) 1) fractio, fractura. Ragh. 16.14. — पुष्पभङ्ग florum contritio. N. 25.7. (Schol. Nîl. पुष्पसम्मर्दः). *trop.* repudiatio. Ragh. 13.78. 2) fragmentum. Ur. 69.4. 3) unda, fluctus, *v. sq.* (Lith. *bangà* unda, fluctus; gr. ἀγή, v. भञ्ज्.)

भङ्गि *f.* (r. भञ्ज् s. इ) 1) fractio, fractura. 2) unda, fluctus. Ragh. 16.63. 3) fraus, fallacia, dolus. Up. 50.

भङ्गुर (r. भञ्ज् s. उर) fragilis. Hit. 43.5.

1. भज् 1. *P. A.* 1) dividere. Man. 9.104.: भ्रातरः समम् भजेरन् पैतृकं रिक्थम्; 9.200.: पत्यौ जीवति यः स्त्रीभिर् अलङ्कारो धृतो भवेत्। न तम् भजेरन् दायादा भजमानाः पतन्ति ते; 9.119.209. 2) colere, venerari, deditum esse, amare. (सेवायाम् *K.*) Bh. 4.11.: ये यथा माम् प्रपद्यन्ते तांस् तथै 'व भजाम्य् अहम्; 6.31.: सर्वभूतस्थितं यो माम् भजति; 7.16.: चतुर्विधा भजन्ते माञ् जनाः; H. 2.29.: कामोपहतचित्ताङ्गीम् भजमानाम् भजस्व माम्; N. 5.32.: यत् त्वम् भजसि ... पुमांसन् देवसन्निधौ; Man. 8.365.: कन्याम् भजन्तीम् उत्कृष्टम्. — भक्त colens, deditus, devotus, amaus. In. 5.44.: वृच्छ्रयेनच सन्तष्ठाम् भक्ताश्च भज; N. 10.14.: मद्भक्ता; 13.57. Sa. 5.95. Bh. 4.3.7.21.23. 3) *c. acc. loci* petere, ire, proficisci. R. Schl. I. 16.28.: नानाविधान् शैलान् काननानिच भेजिरे; Bhatt. 6.72.: वनानि भेजतुर् वीरौ; Mah. 3.11113.: शुकाः पुंस्कोकिलाः क्रौञ्चा विसञ्ज्ञा भेजिरे दिशः. Considere. Mah. 1.5.: निर्दिष्टम् आसनम् भेजे; 1.3867.: राजर्षिः ... ऊरुम् भेजे शुभानना. 4) adipisci, obtinere. R. Schl. I. 27.11.: राजसत्त्वम् भजस्व; 72.11.: कुशध्वजसुते इमे पत्न्यौ भजेतां सहितौ शत्रुघ्नभरताव् उभौ; Man. 10.59. 5) exercere, facere, exequi. Man. 4.204.: नियमान् केवलान् भजन्. (Cf. भाज्, भञ्ज्, भुज्; hib. *fuighim* «I get, obtain», *fuigheall* «profit, gain», «relique, remainder», *faghail* «getting, finding, obtaining»; Pottius apte huc trahit goth. *and-bah-ts* servus, minister; Ag. Benary confert lat. *fa-mulus*, quod etiam ad *FAC* referri potest, ita ut mutilatum sit e *fac-mulus*. V. भग.)

c. निस् secernere, segregare, excludere. Man. 9.207.: स निर्भाज्यः स्वकाद् अंशात्.

c. वि 1) dividere. Mah. 3.10208. Man. 9.164.210.216. 2) distinguere, discernere. Man. 1.65.: अहोरात्रे विभजते सूर्यः. R. Schl. II. 67.31.: विभजन् साध्वसाधुनी. 3) distribuere. Mah. 2.2053.: ते द्वन्द्वशः पृथक्चै 'व ... सिंहासनानि ... विभेजिरे; Ragh. 10.55.: स तेजो वैष्णवम् पत्न्योर् विभेजे; 11.29.: तङ् क्षुरप्रशकलीकृतङ् कृती पत्रिणां व्यभजत्.

c. वि praef. प्र *id.* Mah. 3.16140. Man. 8.166. 9.268. Bh. 11.13.18.41.

2. भज् 10. *P.* भाजयामि (विश्राणने *K.* पाके *V.*) dare, largiri (?) (*), coquere. (Cf. भ्रस्ज्, भृज्, germ. vet. *BACH, PACH, BAKK* torrere, coquere, nostrum *backen.*)

1. भञ्ज् 7. *P.* भनज्मि, *praet. mtf.* अभाङ्क्षम्, *fut.* भङ्क्ष्यामि, *pass.* भज्ये, *part.* भग्न (gr. 607.615.) frangere. H. 1.12.: वने भञ्जन् महाद्रुमान्; 4.23.: बभञ्जतुस् तदा वृक्षान्. *trop.* Mah. 1.6868.: अस्य मा भङ्क्षम् प्रतिज्ञाम्. (Fortasse भञ्ज् mutilatum est e भ्रञ्ज्, cf. lat. *frango*, goth. *BRAK, ga-brika, ga-brak, ga-brêkum*; gr. ῥήγνυμι et abjectâ initiali, ἄγνυμι; lett. *braks* fragilis; hib. *brisim* «I break, dismember, disunite», *brit.* «fraction», *breadach* «broken».)

c. अव *i. q. simpl.* Mah. 1.7081. 3.10043.

c. निस् praef. वि *id.* Mah. 3.12447.: वातविनिर्भग्ना द्रुमाः.

(*) Fortasse pro विश्राणने a r. श्रण् dare legendum est विश्राणे a r. श्रा coquere.